विद्यावार्ता

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318
SPECIAL ISSUE NO. 02
Peer Reviewed International Refereed Research Journal

शंकरराव पाटील महाविद्यालय, भूम व
डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद
यांच्या संयुक्त विद्यमाने

"राजर्षी शाहू, महात्मा फुले, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचे योगदान" या विषयावर एक दिवसीय राष्ट्रीय आंतरविद्याशाखीय परिषद

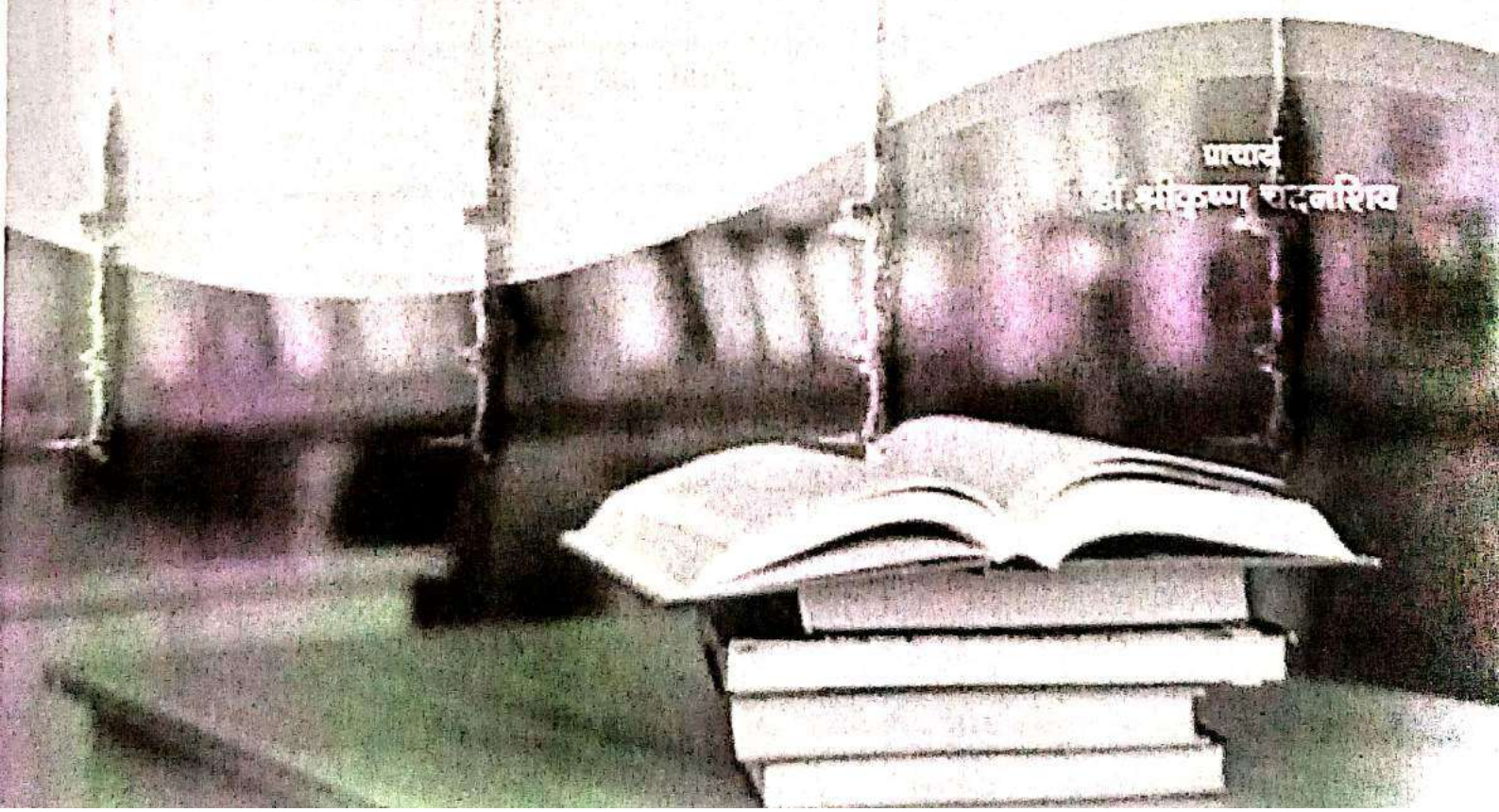

38) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शिक्षण विषयक विचार
डॉ. मंजुषा मुकुंदराव बाबजे, उस्मानाबाद ||116

39) आंबेडकरांच्या विचारविश्वातील स्त्री
डॉ. निलेश गोकुळ शेरे, उस्मानाबाद ||119

40) शाहू, फुले, आंबेडकर यांचे राजकीय विचार
प्रा. नागनाथ कबाडे, तुळजापूर ||122

41) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे आर्थिक विचार
प्रा. सज्जन बिभिषण यादव, उस्मानाबाद ||124

42) म. फुले यांच्या साहित्यातील क्रांतिकारक विचार
प्रा.डॉ. सोपान सुरवसे, बीड ||126

43) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे शेती सुधारणेविषयक विचार व कार्य
भिमराव परमेश्वर वाघमारे, औरंगाबाद ||129

44) राजर्षी शाहु महाराजांच्या शिक्षणविषयक विचारांचा अभ्यास
डॉ. बी. पी. ठाकुर, अहमदनगर ||133

45) शाहु, फुले, आंबेडकर यांचे सामाजिक विचार
मोरे संजय दिनकर, बीड ||136

46) म.जोतिबा फुले : यांच्या साहित्यातील कृषिजीवनचित्रण
प्रा.डॉ. अनिल गर्जे, कडा ||138

47) शिक्षा, कला, क्रिडा प्रेमी राजर्षि शाहु महाराज
डॉ. पल्लवी भूदेव पाटील, लातूर ||142

48) महात्मा फुले के कृषि संबंधी विचार
डॉ. आप्पाराव टाळके, बीड ||143

49) दलित अब दमित नहीं रहेंगे - डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर
डॉ. दत्ता साकोळे, उस्मानाबाद ||146

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with OKEN Scanner

49

दलित अब दमित नहीं रहेंगे - डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर

डॉ. दत्ता साकोळे
हिंदी विभाग, सहाय्यक प्राध्यापक,
शिक्षण महर्षि ज्ञानदेव मोहेकर महाविद्यालय, कलम, जि. उस्मानाबाद

आदर्श स्थिति तो यह है कि मनुष्य और मनुष्य के बीच किसी भी आधार पर भेद न किया जाये। मनुष्य को मनुष्य समझा जाये और सभी को बराबर समझा जाये। लेकिन यह स्थिति तो आदिम व्यवस्था में भी नही थी। प्रकृति और कुछ मानवजाति ने ऊँच - नीच की रेखा खींच दी। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक आदि विभिन्न आधारों पर मनुष्यों के बीच तरह - तरह के विभेदों ने जन्म लिया। अलग - अलग देशों में अलग - अलग समाजों में इन विभेदों का स्वरुप अलग - अलग रहा।

भारत में मानव समाज का विभाजन पहले चार वर्णों में किया गया। फिर वर्णों को विभिन्न जातियों और उप - जातियों तथा गोत्रों आदि में विभाजित किया गया। इसी के परिणाम स्वरुप जाति - पाँति, छुआ - छूत, पाखंड़, आड़ंबर आदि ने समाज में अपने पैर चहु ओर पसार दिये। जैसे की कहावत के अनुरुप छोटी मछली को बड़ी मछली खा जाती है वाली परंपरा आरंभ हो गयी। एक वर्ग दलित के रुप में गाँव - शहर के बाहर अपना अस्तित्व खोजने लगा। उन पर कौन अत्याचार कर रहा है? यह जान लेने तक काफी देर हो चुकी थी। साधारण जनता जिन्हें न कोई सामाजिक अधिकार थे न ही उन्हें इन्सान माना जाता था। इन्हें राह दिखाने वाला, पथ - प्रदर्शन, दलितोध्दारक की जरुरत आन पड़ी। हरिजन को हरि के जन कहनेवाले भी इनकी मात्र जुबानी मदद करते रहे। किन्तु गौतम बुध्द के जन्म के साथ ही नया आयाम दलितों को प्राप्त हुआ।

सत्य, अहिंसा, मानवता की पियूष पिलाकर समूचे मानव जाति के हृदय में अपना विशेष स्थान प्राप्त कर लिया। विशेषकर महाराष्ट्र में दलितों की स्थिति दयनीय थी। ज्योतिबा फूले, सावित्रीबाई फूले ने इन्हें जीने की नयी राह दिखाई। सबसे बड़ी क्रांति तो यह रही कि जब विधवा विवाह होने लगे, नारी, शिक्षण प्राप्त करने लगी। विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक गणराज्य भारत के संविधान निर्माता डॉ. भीमराव आंबेड़कर जी के जन्म के साथ यह धारणा गलत सिध्द हुई कि उच्चजाति का व्यक्ति ही मानव कार्य कर दिखा सकता है। इस बात को मिथ्या साबित कर दिखाया - डॉ. बाबा साहेब आंबेडकर ने। स्वंय अंबेड़कर जी को भी समाज में कई उच्चवर्गीय लोगों के कटाक्ष से गुजरना पड़ा। किन्तु कभी उन्होंने हार नही मानी। एक ज्वलंत उदाहरण भावी पीढ़ी के लिए छोड़ गये। उनका कहना था कि - "दलित नवजवानों को जब कभी अवसर मिले तो वे यह सिध्द करने का प्रयास करें कि वे बुध्दिमानी और योग्यता में किसी भी अन्य व्यक्ति की अपेक्षा रत्ती - भर भी कम नहीं है। साथ ही उन्हें सदा ही निजी स्वार्थ की ओर ध्यान न देकर अपने समाज को स्वतंत्र, बलशाली और प्रतिष्ठित बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।"

डॉ. बाबा साहेब अंबेड़कर की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए कई महान नेताओं के कर्मो ने हमें समाज में इन्सान की उपाधि दिलाई है। आज हम भूतकाल की तरह न तो अधिक पीड़ित हैं और न ही आज हमें किसी के आगे घुटने टेकने की जरुरत हैं। हमने अपना खोया अस्तित्व लगभग पा लिया है। यह बात सौ प्रतिशत सत्य है कि स्प्रिंग को जितना धर - दबोचकर रखेंगे, छोड़ने पर वह उतना ही ऊँचा उठेगा। यह विज्ञान का तर्क दलितों की ओर समाज देख सकता है। पूर्व में हर क्षेत्र में दलित कभी दमित, दबे हुए थे, परंतु आज उन्हीं क्षेत्रों में वे उठे हुए नज़र आते हैं।

सरकार को भी अब इस युग में हमें लुभावने ऑफ़र देने पड़ रहे हैं। कारण साफ है कि यदि हम उनके साथ नहीं रहेंगे, तो उनकी गद्दी खिसक जाएगी। बड़े - बड़े नेताओं को भी हमारा उल्लेख करना ही पड़ रहा है। बौध्द धर्म आज पूरे विश्व में फैला हुआ नजर आ रहा है। अंबेड़कर जी ने कहा था कि मुझे अंधभक्ति नहीं चाहिए, जिन्हें बौध्द में आना हो, वे सोच - समझकर आए जैसे इन्सान का शरीर निरोगी होना चाहिए, उसी तरह उसका मन भी सुसंस्कृत होना चाहिए। व्यक्ति उस ऊँचाई तक पहूँच जाए कि उसे राज गद्दी भी छोटी नजर आये। धर्म की गरीब व्यक्ति को आवश्यकता है।

यह सच है कि देश की व्यवस्था में भ्रष्टाचार एवं शोषण का बोलबाला हो गया है। इस आधुनिक युग में पूँजीवादी जनतंत्र के समस्त भ्रष्ट तंत्र का उद्घाटन हुआ है, भ्रष्टाचारी वर्ग ने अपना अधिपत्य शासन से लेकर पूँजी के समस्त साधनों पर बना रखा है। स्वाधीनता के लम्बे वर्षों के पश्चात् दलित, शोषित वर्ग के सामाजिक आर्थिक जीवन में कुछेक बदलाव जरुर नजर आ रहा है। कर्म के आधार पर जाति की पहचान न के बराबर आज इस युग में दृष्टव्य हो रही है। उच्च कुल की जनता फुटवेअर की दुकान चला रहे हैं। मेरी बात को सत्य की ओर झुकाने के लिए यह छोटा - सा उदाहरण प्रस्तुत है - अस्पृश्यता समाज इंसानियत पाने की कोशिश कर रहा है। सहूलियतें पाने के लिए अस्पृश्य बने रहना उचित नहीं है। बाबासाहेब का उक्त कथन सार्थक जान पड़ता है।

Scanned with OKEN Scanner